शांति, आज़ादी और एकता की भाषा है हिन्दी

बेंगलूरु/दक्षिण भारत

साहित्य अकादमी, दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय ने सेंट्रल कॉलेज कैंपस में हिन्दी सप्ताह मनाया, जिसका समापन समारोह सोमवार को आयोजित हुआ। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बिशप कॉटन क्रिश्चियन विमेंस कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ विनय कुमार यादव उपस्थित थे।

उन्होंने हिन्दी दिवस के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि वर्ष 1949 में 14 सितम्बर को संविधान सभा द्वारा हिन्दी को सर्व सम्मति से देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिन्दी भाषा देश की 24 भाषाओं को अपने साथ लेकर चल रही हैं। वर्ष 1918 में महात्मा गांधी देश की एकता

बनाए रखने और हिंदुस्तान को एक सूत्र में पिरोए रखने के उद्देश्य से दक्षिण भारत आए और यहां दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। इस दिशा में कर्नाटक राज्य का बहुत अद्वितीय योगदान रहा है।

हिन्दी के पश्चात् कन्नड़ साहित्य दूसरे स्थान में आता है जिसमें सबसे अधिक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। साहित्य अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष डॉ चंद्रशेखर कंबार भी ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता हैं। हिन्दी देश की क्रांति की भाषा है, शांति की भाषा है, आज़ादी की भाषा है और एकता की भाषा है।

साहित्य अकादमी के सचिव डॉ महालिंगेश्वरा सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। डॉ महलिंगेश्वरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राष्ट्रीय एकता की भाषा है हिंदी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

बेंगलूरु. साहित्य अकादमी, दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बिशप कॉटन क्रिश्चियन वूमेंस कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ विनय कुमार यादव ने कहा कि यह बड़े ही गौरव की बात है कि हिन्दी भाषा देश की 24 भाषाओं को अपने साथ लेकर चल रही है। वर्ष 1918 में महात्मा गांधी ने देश की एकता बनाए रखने और हिंदुस्तान को एक सूत्र में पिरोए रखने के उद्देश्य से दक्षिण भारत आए और यहां दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। इस दिशा में कर्नाटक राज्य का बहुत अद्वितीय योगदान रहा है। हिन्दी के पश्चात कन्नड़ साहित्य दूसरे स्थान पर है, जिसमें सब से अधिक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। साहित्य अकादमी के वर्तमान अध्यक्ष डॉ चंद्रशेखर कंबार कर्नाटक से तीसरी हस्ती हैं जिन्हें अकादमी में गौरव स्थान प्राप्त हुआ है। साहित्य अकादमी के सचिव डॉ महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।